M.A SEMESTER II Paper VIII

1]

अभिलेखी प्राकृत

इकाई - I अशोक का एक से चतुर्दश शिलाख गिरनार

Q-1 अशोक का एक से चतुर्दश शिलाख गिरनार मे संक्षिप्त सारांश लिखें ?

Ans- अशोक का एक से चतुर्दश शिलाख गिरनार मे संक्षिप्त सारांश →

अशोक सम्राट ने शिलाख का विवरण सही ढंग से लिखे है। जो इस प्रकार के है।

(I) ~~प्रथम शिलालेख~~ प्रथम शिलालेख → पशुवध निषेध: प्रथम शिलालेख के माध्यम से हिंसा न करने का संदेश प्रसारित किया है अर्थात इस लेख में अशोक ने समाज और जीव हिंसा का निषेध किया है, किन्तु यह निषेध उसने प्रत्यक्ष रूप से न करके अपनी पाकशाला में की जानेवाली जीव-हिंसा के निषेधरूप में व्यक्त किया है।

(II) दूसरा शिलालेख → विदेशों में धम्म प्रचार एवं मनुष्य एवं पशुचिकित्सा का उल्लेख किया है। विदेशो मे धर्म का प्रचार करना एवं मनुष्य एवं पशु को देख भाल करने के लिए अस्पताल, रवोलवान, और समय से इलाज करवाने का अति आवश्यक प्रबन्ध करना

(III) तीसरा शिलालेख → राजुक एवं युक्त की नियुक्ति एवं अधिकारियो को हर पाँच वर्ष पर राज्य भ्रमण करने का आग्रह है। जिसे सभी राज्य मे घूम-घूम कर प्रणियो न मरना. पारिवारिक

लोगों, श्रमणों और ब्राह्मणों के साथ समुचित व्यवहार माता पिता और वृद्धों की सेवा करना धर्माचरण के अन्तर्गत सभी को देखना, यह तीसरा शिलालेख में अशोक का विवरण है।

(IV) चतुर्थ शिलालेख → अशोक ने अपने राज्याभिषेक के बारहवें वर्ष में लिखवाया था। इस अभिलेख में उसने धर्मानुसार आचरण को श्रेष्ठ बताया है। इस बात की घोषणा की है कि वह धर्माचरण का स्वयं पालन करेगा और आशा प्रकट की है कि ऐसी उसके उत्तराधिकारी पुत्र पौत्र, सभी इसके अनुसार आचरण करेंगे तथा जनता भी यह धर्माचरण करे।

(V) पञ्चम शिलालेख → धम्ममहामात्रों की नियुक्ति, अशोक ने लोक-कल्याण की चर्चा की है। उसने धर्मानुशासन की देख-रेख हेतु धर्ममहामात्र के रूप में एक नये पद की सृष्टि की। इस धर्ममहामात्र की नियुक्ति उसने सभी धार्मिक पंथों के धर्मानुष्ठान और धर्म वृद्धि के लिए किया था। अशोक ने अपने राज्य में जगह-जगह इन धर्ममहामात्रों की नियुक्ति तो किया ही था साथ ही समाज के वर्ग विशेष और परिवार में अलग से धर्मयुक्त नियुक्त किया था।

(VI) छठा शिलालेख → अशोक ने इस शिलालेख में जन मामलों को निपटाने के लिए प्रशासनिक सुधारों का उल्लेख किया है।

VII सातवाँ शिलालेख → अशोक सभी धार्मिक मतों के प्रति निष्पक्षता रखेगा।

(VIII) आठवाँ शिलालेख → इस शिलालेख में अशोक ने बोधगया की यात्रा का उल्लेख एवं विहार यात्रा के स्थान पर धम्मयात्रा का प्रतिपादन किया है।

(X) नवाँ शिलालेख → अशोक ने मंगलकार्य करने को कर्तव्य बताया है किन्तु कहा है कि यह कार्य अल्प फलवाला है। इसलिए महान फल देने वाले धर्म मंगल करने की सलाह अशोक ने दी है। उनके अनुसार धर्म मंगल क्या है - दास-भृत्य के प्रति उचित व्यवहार, गुरुजनों की पूजा, प्राणियों संयम और श्रमणों तथा ब्राह्मणों को दान। अशोक ने कहा है कि इसके लिए पिता, पुत्र भ्राता स्वामी मित्र परिचित अर्थात सबको प्रेरित करना चाहिए। दान की प्रशंसा करते हुए अशोक ने धर्मदान को श्रेष्ठ कहा है और उसे स्वर्ग प्रदान करनेवाला कर्तव्य बताया है।

(XI) दसवाँ शिलालेख → अशोक के उद्यम का लक्ष्य धम्माचरण की श्रेष्ठता घोषित - इस अभिलेख में कहा है प्रजा और दान की अपेक्षा धार्मिक सम्प्रदायों के बीच सद्भावना को वह महत्व देता है। अपने धार्मिक विश्वास (सम्प्रदाय) की पूजा की जाय बल्कि दूसरे धार्मिक विश्वासों (सम्प्रदायों) की निन्दा न की जाय तथा मेल-जोल से रहा जाय। दूसरे धर्म के लोगों की बात भी सुनी और समझी जाय। अतः सभी धर्मों (पंथों या सम्प्रदायों) की वृद्धि के निमित्त धर्ममहामात्र, स्त्री-अध्यक्ष महामात्र, व्रज भूमिक और निकायों संस्थाओं के स्थापित किये जाने की बात कही गयी है।

XII बारहवाँ शिलालेख → इस शिलालेख में अशोक ने धम्म के तत्वों का प्रकाशन किया सभी धर्मों के तत्वों का विचार विमर्श किया है।

(XIII) तेरहवाँ शिलालेख → इस शिलालेख में अशोक ने ~~धम्म~~ धार्मिक सहिष्णुता पर जोर दिया है।

Scanned with CamScanner

(xiii) तेरहवाँ शिलालेख → कलिंग युद्ध के बाद धम्म विजय की घोषणा। विदेशों में धम्म प्रचार (पाँच विदेशी राज्य की चर्चा का उल्लेख है - अशोक ने कलिंग के विजय की चर्चा की है। कहा गया है कि आठवें राजवर्ष में अशोक ने कलिंग विजय किया। इस युद्ध में डेढ़ लाख व्यक्ति बन्दी बनाये गये, एक लाख घायल हुए और बड़ी संख्या में लोग मारे गये। इस युद्ध के पश्चात अशोक ने पश्चाताप का अनुभव किया और धर्मविजय की ओर प्रेरित हुआ। इनके अतिरिक्त अपने राज्य के अन्तर्गत यवन कम्बोज, नाभक नाभपति भोज पितनिक, अन्ध्र और पुलिन्द का उल्लेख किया। अशोक ने धर्मविजय का महाफल, पारलौकिक सुख कहा माना है। अशोक ने कहा है कि धर्मविजय ही वास्तव में विजय है क्योंकि यह इहलौकिक और पारलौकिक फल देनेवाला है।

(xiv) चतुर्दश शिलालेख → इस शिलालेख में धर्मलिपि के सम्बन्ध में बताया है; अर्थात् कह सकते है कि अशोक का यह अभिलेख उसके समस्त अभिलेखों के उपसंहार स्वरूप है। इसमें अशोक ने अपने लेखों को धर्म-लिपी का नाम दिया और उनके विविधरूपता के कारणों को बताया है और उनके अधूरे होने की सम्भावना का अनुमान कर स्पष्टीकरण प्रस्तुत किया है। उसने कहा है कि → साम्राज्य बहुत विशाल होने से सब लेख सर्वत्र नही लिखवाए जा सके; बातों की मधुरता के कारण उनमें पुनरुक्ति की गई तथा कुछ लेख स्थानाभाव संक्षेपीकरण अथवा लेखकों की प्रमाद के कारण अपूर्ण रहा है।